लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

बीरुबाला राभा का साक्षात्कार

साक्षात ग्रहण-सिमि कौँवर

बीरुबाला राभा एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जो असम में जादू-टोना और डायन के शिकार के खिलाफ अभियान चलाती आ रही है। वे 'मिशन बीरुबाला' नामक एक संस्था चलाती हैं, जो डायन के शिकार के खिलाफ जागरूकता फैलाती हैं।

अंधविश्वास और कु-संस्कार के खिलाफ साहसिकता के साथ लड़ने के लिए सन् 2005 ई. में शांति के नोबेल पुरस्कार से मनोनीत की गई पहली असमीया महिला हैं बीरुबाला राभा। उनके कर्मों के लिए सन् 2015 ई. में गौहाटी विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की थी। बीरुबाला राभा केवल असम तथा भारत की ही नहीं पूरे विश्व का एक परिचित नाम हैं । उससे भी ज्यादा गौरव महसूस करनेवाली बात यह है कि राष्ट्र संघ के जेनेवा स्थित कार्यालय में आयोजित 'हिवमेन राइर्टस डिफेंदर' शीर्षक संगोष्ठी पर जानेवाली, राष्ट्रसंघ द्वारा आमंत्रित एक असमीया महिला हैं।

आपलोग जानकर चकित होंगे कि बीरुबाला राभा ने तीसरी कक्षा तक की ही पढ़ाई की है। फिर भी वे हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं । अंधविश्वास और कु-संस्कार के खिलाफ लड़ते हुए उन्होंने जीवन के कुछ पहलुओं को इस तरह जाहिर किया है।

सिमि कौँवर : *गोवालपारा जिले के ठाकुरबिला की बीरुबाला राभा से वर्तमान की डॉ. बीरुबाला राभा- इस लंबी यात्रा के बारे में कुछ बताइए।*

बीरुबाला राभा : गोवालपारा जिले के ठाकुरबिला के एक जनजातीय परिवार में मेरा जन्म हुआ । छोटी उम्र में ही पिताजी गुजर गये थे। माँ ने मुझे अकेले ही पाला-पोषा। बचपन से ही देखती आ रही हूँ कि माँ ने महिलाओं के हक में काम किया है। माँ से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला । इसलिए महिलाओं के लिए कुछ करने की ख़्वाहिश बचपन से ही मन में थी।

हम महिलाएँ समाज-कर्मी हैं । घर से लेकर बाल-बच्चों तक की देखभाल की जिम्मेदारी हमारे

ऊपर रहती है । महिलाएँ श्रेष्ठ मानव जाति का महत्वपूर्ण हिस्सा है । मनुष्य की सृष्टि के मूल में नारी ही है और मनुष्य से इस व्यापक मानव-समाज का निर्माण होता है । मानव सेवा ही श्रेष्ठ धर्म है । हमारे सभी के जीवन में एक लक्ष्य होता है और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए एक गहरी इच्छा शक्ति और कोशिश अत्यंत आवश्यक है । कोशिश के बिना कार्य में सफलता पाना बेहद ही मुश्किल है । मंजिल तक पहुँचने हेतु मन की इच्छा शक्ति ही आत्मबल है । आत्मबल की दो दिशाएँ होती हैं- पहले का संबंध मन से है तो दूसरे का कर्म के साथ । मानव ही श्रेष्ठ है और इस दुनिया में मानव के लिए नामुमकिन कुछ भी नहीं है । सन् 1985 ई. से ही मैं ठाकुरबिला में समाजकर्मी के रूप में काम कर रही हूँ । गाँव में महिला समिति खोलकर उसके जरिए समाज के अंधविश्वास, कु-संस्कार जैसे- बाल-विवाह, बहु-विवाह, पारिवारिक संघात, नशे की आदत से लोगों को मुक्त कराने का काम कर रही हूँ । डायन के संदेह में अभियुक्त पाँच महिलाओं को शारीरिक और मानसिक अत्याचारों से हमने बचाया है । सन् 1985 ई. में मेरा पहला बेटा धर्मेश्वर मलेरिया से ग्रसित हुआ और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया । डॉक्टरी इलाज से भी वह ठीक न हो सका । देउधनी ने अगले तीन दिनों में उसकी मृत्यु की भविष्य वाणी की । दुर्भाग्यवशः बेटे की बीमारी के पश्चात् मेरे पति भी बीमार पड़ गये । इस अस्वस्थता के कारण गाँव के लोग मुझे डायन समझने लगे और मुझे गाँव से अलग भी रखा गया ।

सन् 1991 ई. में बोरझार आंचलिक महिला समिति के साथ मैं काम करने लगी । सन् 1999 ई. से ही असम महिला समता सोसाइटि के माध्यम से मैंने अंधविश्वास, कु-संस्कार आदि के खिलाफ आवाज उठायी है । परवर्ती समय में हमारी सामुहिक चेष्टा के परिणामस्वरूप डायन के शक में अभियुक्त 35 महिलाओं के प्राणों की रक्षा हुई । सन् 2006 ई. से 2010 तक मैंने गोवालपारा की पारिवारिक समस्या के समाधान केंद्र में सदस्य के तौर पर काम किया । सन् 2011 ई. में मिसन बीरुबाला का गठन कर अंधविश्वास और कु-संस्कार के खिलाफ जागरूकता लाने की कोशिश की । हमारे प्रमुख उद्देश्य हैं- लोगों की सेवा, नारी जीवन की रक्षा, समाज-संस्कार आदि । फिलहाल असम विज्ञान समिति, इलोरा विज्ञान मंच के सहयोग से हम अंधविश्वास और कु-संस्कार के खिलाफ संग्रामरत हैं।

सिमि कोँवर : *क्या प्रशासन और सरकार के तरफ से आपको कुछ सहायता मिली है ?*

बीरुबाला राभा- हाँ, इस कार्य में प्रशासन और सराकर की ओर से भरपूर मात्रा में सहयोग प्राप्त हुआ है । प्रशासन और सरकार की सहयोगिता के कारण ही अंधविश्वास और कु-संस्कार के खिलाफ इस संग्राम को आगे बढ़ा पा रही हूँ । उनलोगों की

सहयोगिता के बिना मिसन बीरुबाला को आगे ले जाना असंभव था।

सिमि कौँवर : *समाज को इन अंधविश्वासों और कु-प्रथाओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? इस पर आपका विचार व्यक्त कीजिए।*

बीरुबाला राभा : समाज को इन अंधविश्वासों और कु-प्रथाओं से मुक्त करने के लिए महिलाओं को अपने बच्चों को यह शिक्षा देनी होगी कि समाज में डायन का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ये सब समूह द्वारा स्वार्थसिद्धि के लिए किये गये काम हैं। पैसों के लालच में देउधनी ये काम करती है। विद्यालय-महाविद्यालयों की भी यह जिम्मेदारी होगी कि वे छात्र-छात्राओं को इस विषय में ज्ञान दें। पाठ्यपुस्तकों में भी ऐसे विषयों को शामिल करने की व्यवस्था करनी होगी ताकि छात्र-छात्राओं के मन में अंधविश्वास और कु-प्रथाएँ घर न कर सके।

सिमि कौँवर: *क्या आप ईश्वर को मानती हैं ?*

बीरुबाला राभा : हाँ, मैं ईश्वर को मानती हूँ। ईश्वर हैं, इसलिए हम जीवित हैं। न्याय पूर्वक किया गया पूजा-पाठ समाज में मंगल करता है। ईश्वर इंसान के बीच ही मौजुद हैं। मानव सेवा ही श्रेष्ठ धर्म है। यही लोकविश्वास है। देव-देवियों के नाम पर अन्याय पूर्वक मानव तथा जीव-जंतुओं का बलि-विधान अंधविश्वास है। यह न्याय नहीं है। समाज में फैले इस प्रकार के पूजा-पाठ और कु-संस्कारों से दूर रहना ही हमारे लिए उचित है।

सिमि कौँवर : *एक जनजातीय गरीब परिवार में जन्म लेकर भी आज आपने साहस पूर्ण कर्म के जरिए संपूर्ण नारी समाज को गौरवान्वित किया है। हम आशा करते हैं कि आप अपने लक्ष्य में सफल हो। हम हमेशा आपके साथ हैं।*

बीरुबाला राभा : तुमलोगों को भी मेरी ओर से शुभकामनाएँ। सही शिक्षा से शिक्षित होकर समाज को आगे ले जाओ। अगर मैं एक बीरुबाला इतना कुछ कर सकती हूँ, तो तुमलोग अगर सामुहिक तौर पर बाहर निकल कर आओगे तो और भी अधिक काम होगा। तुमलोग भी बाहर निकलो। हम निश्चय ही एक अंधविश्वास और कु-संस्कार मुक्त समाज का निर्माण कर पायेंगे। धन्यवाद।

संपर्क-सूत्र:
सिमि कौँवर
डिमरुगुरि,नगाँव